HINDI (MIL)

SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY FIRST YEAR COURSE

प्रस्तावना :

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की दरकार होती है, जहाँ भाषा का इस्तेमाल भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम साहित्यिक बोध के साथ साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा अहमियत देता है। यह पा्यक्रम उन विद्यार्थीीं के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान-समाजविज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहैंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोजगाहर में लग जाएंगे। वहां कामकाजी हिंदी का आदारफूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की दिलचस्पी जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठफूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थीियों के संबंध को सहज बनाएगा विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंके, वे यथर्थ की अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साथन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पायेंगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेक।

उद्देश्य :

- इन माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा, प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने ौर उनका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र, भाषा संबंधी) के प्रति साकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैाये का विकास।
- पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा नजरिये की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की स्फूर्ति, विकास, उनमें साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- कामकाजी हिंदी उपयोग के कौशल का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट ौर इलेकट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की मांगों के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।

शिक्षण-युक्तियाँ

- ❖ कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यही कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चुँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंटस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीजों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकासित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज्यादा सफाई उनमें आ जाएगी।
- ❖ कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनकी कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- ❖ भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसी प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह शिखा सके कि वे भी सब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे है। इससे विद्यार्थियों में उसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जायेंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पायेंगे।
- ❖ कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, टुयुटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय आदि पर हबल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय-समय पर इस माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

HINDI (MIL)

SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY FIRST YEAR COURSE

One Paper **Time : Three hours** **Marks : 100**

Unitwise Distribution of Marks & Periods :

Unit	Topics	Marks	Periods
Unit-I	अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश- बोध) (15+5)	20	40
Unit-II	रचनात्मक लेखन (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन)	25	45
Unit-III	पाठ्यपुस्तक : आरोह (भाग-1) (20+20)	40	60
Unit-IV	पूरक पुस्तक : वितान (भाग-1)	15	35
	Total :	**100**	**180**

Unitwise Distribution of Course contents:

Unit-I : अपठित बोध : **20**

1. काव्यंश बोध : (काव्यंश पर आधारित पाँच लघुउत्तरात्मक प्रश्न) 05
2. गद्यांश बोध : (गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनातरण, शर्षक आदि पल लघुउत्तरात्मक 15

Unit-II : रचनात्मक लेखन : (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन) : 10+15=25

1. निबंध (विकल्प सहित) 10
2. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05
3. निर्धारित पुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर जनसंचार की विधाओं पर प्रश्न 05
   - ❖ प्रिंट माध्यम (समाचार और सम्पादकीय)
   - ❖ रिपोर्ट/आलेख
4. फीचर लेखन (जीवन-संदर्भ से जुड़ी घटना और स्थितियों पर) 05

Unit-III : आरोह (काव्य भाग-20 अंक, गद्य भाग-20 अंक) : **40**

(काव्य भाग)

1. दो काव्यंशों में से किसी एक पर अर्थग्रहण के चार प्रश्न 2+2+2+2=8
2. दो में से एख काव्यांश के सौन्दर्यबोध पर दो प्रश्न 3+3=6
3. कविता की विषय-वस्तु पर आधारित तीन लघुउत्तरात्मक प्रश्न 2+2+2=6

(गद्य भाग)

4. दो में से एख गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधित 4 प्रश्न 2+2+2+2=8

5.	पाठों की विषयवस्तु पर आधारित 5 में से 4 बोधत्मक प्रश्न	3+3+3+3=12

Unit-IV : वितान भाग-1		**15**
1.	पाठों की विषयवस्तु पर आधारित चार में से तीन लघुउत्तरात्मक प्रश्न	3+3+3=9
2.	विषयवस्तु पर आधारित दो में से एक निबंधात्मक प्रश्न	06

निर्धारित पुस्तकें :

1. आरोह भाग-1 एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित
1. वितान भाग-1 एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित
2. अभिव्यक्ति और माध्यम- एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित

❑ ❑ ❑

HINDI (MIL)

SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY COURSE

प्रस्तावना

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की दरकार हेती है, जहाँ भाषा का इस्तेमाल भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम साहित्यिक बोध के साथ-साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा अहमियत देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान-समाज विज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोजगार में लग जाएंगे। वहाँ कामकाजी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की दिलचस्पी जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठभूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थियों के संबंध को सहज बनाएगा। विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंगे, वे यथार्थ को अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पाएंगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक दृष्टि का विकास हो सकेगा।

उद्देश्य

- इन माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा-प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र-भाषा संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैये का विकास।
- पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा नजरिये की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की स्फूर्ति, विकास, उसमें साहित्य को श्रेष्ठ, बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।

- ❖ विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- ❖ कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का विकास।
- ❖ संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की मांगों के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।
- ❖ विद्यार्थी में किसी भी अपरिचित विषय से संबंधित प्रासंगिक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और उन्हें व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखिक और लिखित प्रस्तुति करने की क्षमता का विकास।

शिक्षण-युक्तियाँ

- ❖ कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती है। एक तो यही कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंटस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीजों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज्यादा सफाई उनमें आ पाएगी।
- ❖ भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में शब्द विशेष के प्रयोग पर मनाही को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ जरूरी है कि छात्रों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं चलेगा, बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना जरूरी है।
- ❖ शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना जरूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का अधिकार और उसकी काबिलियत रखते हैं। उनकी राय को तवज्जों देने और उसे बेहतर तरीके से पुनर्प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहाँ बहुत उपयोगी होगी।
- ❖ विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षक को अक्सर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा, जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखता, उसके कच्चे-पक्के वक्तव्य को मानक भाषा-शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देता है और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देता है।
- ❖ अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन करने और सोचे हुए की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षक के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षक को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए विषय प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषन करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की निस्सीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध-संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न ले। तैयारशुदा सामग्री के लोभ से, बाध्यतावश ही सही मुक्ति पाकर

विद्यार्थी नये तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के यत्न में सन्नद्ध होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार, संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्यार्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षक को उचित हावभाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।

- ❖ मध्य कालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-विडियो कैसेट तैयार किए जाएं। अगर आसानी से कोई गायक-गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन-शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- ❖ वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की जरूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।
- ❖ कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्रियाँ को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनकी कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- ❖ भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सके कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुंचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएंगे।
- ❖ कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, ट्युटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय-समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

HINDI (MIL)

SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY FINAL YEAR COURSE

One Paper **Three Hours** **Marks 100**

Unitwise Distribution of Marks and Periods :

Unit No.	Title	Marks	Periods
Unit-I	अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश-बोध)	15+5=20	40
Unit-II	रचनात्मक लेखन एवं जन-संचार		

	माध्यम अभिव्यक्ति और माध्यम (प्रिंट माध्यम, संपादकीय, रिपोर्ट, आलेख, फीचर-लेखन)	5+5+5+5+5=25	60
Unit-III	पाठ्य पुस्तक : आरोह (भाग-2) (काव्यांश-20, गद्यांश-20)	40	80
	पूरक पुस्तक : वितान (भाग-2)	15	20
	Total	**100**	**200**

Unitwise Distribution of Course contents :

Unit-I : अपठित बोध : **20**

1. काव्यांश-बोध पर आधारित पाँच लघुत्तरात्मक प्रश्न (1×5) 5
2. गद्यांश-बोध पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघुत्तरात्मक प्रश्न) 15

Unit-II : रचनात्मक लेखन एवं जन-संचार माध्यम : **25**

1. निबंध (किसी एक विषय पर) 10
2. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 5
3. ❖ प्रिंट माध्यम, संपादकीय, रिपोर्ट, आलेख आदि पर पाँच अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएंगे 5
   ❖ आलेख (किसी एक विषय पर)
4. फीचर लेखन (जीवन-संदर्भों से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों पर फीचर लेखन-विकल्प सहित) 5

Unit-III : आरोह भाग-2 (काव्य भाग और गद्य भाग) **20 + 20 = 40**

1. दो काव्यांशों में से किसी एक पर अर्थ ग्रहण के चार/पाँच प्रश्न 8
2. काव्यांश के सौन्दर्यबोध पर दो काव्यांशों में विकल्प दिया जाएगा तथा किसी एक काव्यांश के तीनों प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। 6
3. कविताओं को विषय-वस्तु से संबंधित तीन में से दो लघुत्तरात्मक प्रश्न 3 + 3 = 6
4. दो में से किसी एक गद्यांश पर आधारित अर्थ-ग्रहण के चार प्रश्न 2 + 2 + 2 + 2 = 8
5. पाठों की विषय-वस्तु पर आधारित पांच में से चार बोधात्मक प्रश्न 3 +3 +3 +3 = 12

पूरक पुस्तक : वितान भाग-2 **15**

1. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित तीन में से दो बोधात्मक प्रश्न 3 + 3 = 6
2. विचार/संदेश पर आधारित तीन में से दो लघुत्तरात्मक प्रश्न 2 + 2 = 4
3. विषयवस्तु पर आधारित दो में से एक निबंधात्मक प्रश्न 5

निर्धारित पुस्तकें :

(i) आरोह-भाग-2

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित और असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित

(ii)वितान भाग-2

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित और असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित

(iii) अभिव्यक्ति और माध्यम

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा विकसित और असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित

The following prose & Poetry pieces are prescribed for H.S. Final year course in Hindi

काव्य खंड

1.	दिन जल्दी-जल्दी ढलता है	-हरिवंशराय बच्चन
2.	कविता के बहाने	-कुँवर नारायण
3.	कैमरे में बंद अपाहिज	-रघुवीर सहाय
4.	सहर्ष स्वीकारा है	-गजानन माधव मुक्तिबोध
5.	उषा	-शमशेर बहादुर सिंह
6.	कवितावली	-तुलसीदास
7.	रूबाइयाँ	-फिराक गोरखपुरी
8.	छोटा मेरा खेत	-उमाशंकर जोशी

गद्य खंड

9.	बाजार दर्शन	-जैनेंद्र कुमार
10.	काले मेघा पानी दे	-धर्मवीर भारती
11.	चार्ली चैप्लिन यानी हम सब	-विष्णु खरे
12.	नमक	-रजिया सज्जाद जहीर
13.	शिरीष के फूल	-हजारीप्रसाद द्विवेदी

पूरक पुस्तक

1.	सिल्वर वैडिंग	-मनोहर श्याम जोशी
2.	अतीत में दबे पाँव	-ओम थानवी

***